नैक द्वारा 'बी' ग्रेड प्रत्यायित

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

मो. : 7897475917, 9794299451

Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : .....

दिनांक : 10.01.2019

प्रकाशनार्थ

अंग्रेजी विभाग द्वारा व्याख्यान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि भगवान दत्त महिला महाविद्यालय की सहायक आचार्या डॉ. नीलिमा दूबे ने कहा कि व्याख्यान प्रतियोगिताए, व्यक्तित्व विकास, क्म्युनिकेश स्किल के विकास तथा आत्मविश्वास वृद्धि में सहायक होती है। व्याख्यान प्रतियोगिता में इपिक, नाइट आफ स्कार्पिथन, सोनेट, टू ब्रेन इज वाइडर दैन स्काई, ट्वेल्थ नाइट, विंग्स आफ फायर, करप्शन आदि विषय पर छात्र–छात्राओं द्वारा तैयार व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में **सर्वेश्वर बी.ए. प्रथम वर्ष** को **प्रथम स्थान**, **सौरभ ओझा, शिवांगी राय बी.ए. द्वितीय वर्ष** को **द्वितीय स्थान, कौशिकी चतुर्वेदी** को **तृतीय स्थान** एवं **दीप्ती चतुर्वेदी** ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। कार्यक्रम में अंग्रेजी विभाग की प्रभारी श्रीमती कविता मन्ध्यान सहित अंग्रेजी विभाग के छात्र–छात्राए उपस्थित रहे।

एक अन्य कार्यक्रम में मानव सभ्यता के सृजन एवं विकास में युद्धों का अपना विशेष स्थान रहा है। युद्धों से प्राप्त होने वाली शिक्षाओ ने सदैव मानव जाति को लाभन्वित किया है। सम्भवः इसीलिए युद्ध को सर्वोत्तम शिक्षक कहा गया है। युद्ध जितना विनाशक एवं दीर्घकालीन होता है, उससे प्राप्त होने वाली शिक्षाएं उतनी ही महान होती है महाभारत का युद्ध, कलिंग युद्ध, प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध, ये कुछ ऐसे युद्ध थे, जिन्होने मानव जाति को कई सीखों से नवाजा है। युद्ध में प्रयुक्त होने वाले आयुधो एव अस्त–शस्त्र के व्याख्यानों से भरे पड़े हैं, जिनमे से ज्यादातर का दर्शन हमे आज के आधुनिक अस्त्र–शस्त्रों से होता है। बह्मास्त्र (वेजन आफ मास डिस्ट्रक्सन), इन्द्रास्त्र (साउण्ड गाइडेड मिसाइट) नारायण (यू0पी0वी0), धनुष (कम्पास युक्त लांचिंग पैड), मार्गवास्त्र (मल्टी बैरल राकेट लांचर) अर्न्धध्यानास्त्र (स्टील्थ टेक्नोलॉजी) इत्यादि अस्त्र–शस्त्रो का विवरण वेदों तथा उपनिषदों में है जिनका परिमार्जित स्वरूप हमें आज के आयुधों में परिलक्षित होता है। इसके अतिरिक्त समय–समय पर अन्य अनेक प्रकार के अस्त्र–शस्त्र मानव समाज में सम्मिलित होते गए। उक्त बातें महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज जंगल धूसड़ गोरखपुर के **प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग** द्वारा आयोजित **''प्राचीनकालीन प्रमुख आयुद्य''** विषयक विशेष व्याख्यान में रक्षाअध्ययन विभाग के प्रवक्ता डॉ. रमाशंकर दूबे जी ने कही।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचीन इतिहास विभाग के प्रवक्ता डॉ. सौरभ सिंह ने कहा कि भारतीय समाज ने समय–समय पर विविध प्रकार के हथियारो को अपनी सैन्य तुकडियों में शामिल किया है। छठीं शताब्दी ई. पूर्व. में मगध के शासक अजातशत्रु द्वारा रथमूसल और महाशिलाकटक नामक हथियार का अपनी सेना में प्रयोग करना सैन्य इतिहास के दृष्टिकोण से क्रांतिकारी कदम था। व्याख्यान कार्यक्रम में अन्त में प्राचीन इतिहास विभाग के प्रभारी सुबोध मिश्र ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी